शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण
सत्र 2. शिष्यत्व क्या है? (2क)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: **लूका 9:23-24**
23 और उसने सब से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आए,
वह अपने आप को नकारने दो और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाओ और मेरे पीछे हो ले।
24 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खो देगा।
परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोता है इसे बचाएंगे।

चरण 3: *बाइबल अध्याय पढ़ें और चर्चा करें -* ***लूका 9***

चरण 4: व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक. सुकरात और प्लेटो से हम शिष्यत्व के बारे में क्या सीख सकते हैं?

दो. शिष्यत्व के दो आवश्यक घटक क्या हैं?

तीन. अपने ईसाई जीवन में किस बिंदु पर आप शिष्य बन जाते हैं?

चार. चर्चा कीजिए कि कैसे कोई व्यक्ति परमेश्वर के उद्धार के उपहार को एक शिष्य और इस प्रकार एक शिष्य-निर्माता होने से अलग नहीं कर सकता है।

चरण 5: *पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय 2 ए लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

ग्रीस के स्वर्ण युग के दौरान, युवा प्लेटो को अपने गुरु की खोज में एथेंस की सड़कों पर टहलते हुए देखा जा सकता था: जर्जर, नंगे पैर और शानदार सुकरात। यहाँ, शायद, शिष्यत्व की शुरुआत थी। सुकरात ने कोई किताब नहीं लिखी। उनके छात्रों ने उनके द्वारा बोले गए हर शब्द को ध्यान से सुना और दूसरों को सिखाने की तैयारी में उन्होंने जो कुछ भी किया उसे देखा। जाहिर है, सिस्टम ने काम किया; प्लेटो ने बाद में अकादमी की स्थापना की, जहां 900 वर्षों तक दर्शन और विज्ञान पढ़ाया जाता रहा।

यीशु ने उन लोगों के साथ इसी तरह के रिश्ते का इस्तेमाल किया जिन्हें उसने परमेश्वर के राज्य को फैलाने के लिए प्रशिक्षित किया था। उनके शिष्य तीन साल तक दिन-रात उनके साथ रहे। उन्होंने उसके उपदेशों को सुना और उसकी शिक्षाओं को याद किया। उन्होंने उसे वह जीवन जीते देखा जो उसने सिखाया था। फिर, उसके स्वर्गारोहण के बाद, शिष्यों ने मसीह के वचनों को दूसरों को सौंपा और उन्हें उसकी जीवन शैली को अपनाने और उसकी शिक्षा का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया। एक शिष्य एक छात्र है जो दूसरों को सिखाने की तैयारी में अपने शिक्षक के शब्दों, कार्यों और जीवन शैली को याद करता है।

ईसाई शिष्यत्व एक शिक्षक-छात्र संबंध है, जो मसीह और उसके शिष्यों के मॉडल पर आधारित है, जिसमें शिक्षक छात्र में मसीह में अपने जीवन की पूर्णता को इतनी अच्छी तरह से पुन: पेश करता है, कि छात्र दूसरों को सिखाने के लिए दूसरों को प्रशिक्षित करने में सक्षम होता है।

मसीह की शिक्षा और जीवन के सावधानीपूर्वक अध्ययन से पता चलता है कि शिष्यत्व के दो आवश्यक घटक हैं: आत्म-मृत्यु और प्रजनन। वे यीशु की संपूर्ण सेवकाई को मुख्य रूप देते हैं। वह मर गया ताकि वह नए जीवन को पुन: उत्पन्न कर सके। और वह अपने प्रत्येक शिष्य से उसके उदाहरण का अनुसरण करने की अपेक्षा करता है।

आत्म-मृत्यु

शिष्यत्व के लिए मसीह का आह्वान आत्म-मृत्यु का आह्वान है, परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण है। यीशु ने कहा, "... यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह अपने आप को इन्कार करे, और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे कारण अपना प्राण खोएगा, वही उसे बचाएगा" (लूका 9:23,24)।

दुनिया के दृष्टिकोण से, लोगों को उसका अनुसरण करने के लिए बुलाने में मसीह की स्पष्टवादिता चरम प्रतीत होती है। आज यदि कोई व्यक्ति इस तरह की मांग वाली जीवन शैली, एक सर्व-उपभोग करने वाली प्रतिबद्धता को "बेचना" चाहता है, तो वह शायद एक पूर्ण-रंगीन ब्रोशर में इस तरह के निर्णय के शानदार लाभों का सावधानीपूर्वक वर्णन करने के लिए सबसे परिष्कृत मैडिसन एवेन्यू फर्म को बनाए रखेगा। या वह सबसे ग्लैमरस अभिनेत्री को काम पर रखेगा और उसे "सुंदर लोगों" के साथ घेर लेगा जो स्पष्ट रूप से मसीह में अपने नए जीवन की संतुष्टि और आनंद का आनंद ले रहे हैं। फिर वह वीडियो टेप पर उस पल के जादू को पकड़ेगा, जो उम्मीद है कि "मंडे नाइट फुटबॉल" के दौरान हाफटाइम में प्रसारित किया जाएगा।

लेकिन यीशु ईमानदार और प्रत्यक्ष है: उसकी महिमा में भाग लेने के लिए एक व्यक्ति को पहले उसकी मृत्यु में भाग लेना चाहिए।

यीशु प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है। और ब्रह्मांड का प्रभु हर एक व्यक्ति को उसका अनुसरण करने की आज्ञा देता है। पतरस और अन्द्रियास (मत्ती 4:18,19) और याकूब और यूहन्ना (मत्ती 4:21) को उसका बुलावा एक आज्ञा थी। "मेरे पीछे आओ" हमेशा एक आज्ञा रही है, कभी निमंत्रण नहीं (यूहन्ना 1:43)।

यीशु ने कभी भी किसी से उसका अनुसरण करने की विनती नहीं की। वह शर्मनाक रूप से सीधा था। उसने कुएं पर महिला का उसके व्यभिचार के साथ, नीकुदेमुस को अपने बौद्धिक अभिमान के साथ और फरीसियों को उनकी आत्म-धार्मिकता के साथ सामना किया। कोई भी "... पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है" भीख मांगने के रूप में व्याख्या नहीं कर सकता (मत्ती 4:17)। यीशु ने प्रत्येक व्यक्ति को स्व-खोज को त्यागने, अपने पापों को त्यागने और पूरी तरह से उसकी आज्ञा का पालन करने की आज्ञा दी।

जब अमीर युवा शासक ने सब कुछ बेचने और उसका अनुसरण करने से इनकार कर दिया (मत्ती 19:21), तो यीशु समझौता करने की कोशिश में उसके पीछे नहीं भागा। उसने कभी भी अपने मानक को कम नहीं किया। यीशु ने बस इतना कहा, "जो कोई मेरी सेवा करता है वह मेरे पीछे आना चाहिए ..." (यूहन्ना 12:26)।

यीशु ने तत्काल आज्ञाकारिता की अपेक्षा की। उसने कोई बहाना स्वीकार नहीं किया (लूका 9:62)। जब एक व्यक्ति ने मसीह का अनुसरण करने से पहले अपने पिता को दफनाना चाहा, तो उसने उससे कहा, "मेरे पीछे हो लो; और मरे हुओं को अपने मरे हुओं को गाड़ने दो" (मत्ती 8:22)। मसीह की आज्ञा का पालन करने और उसका शिष्य बनने के लिए किसी की प्रशंसा नहीं की गई; यह अपेक्षित था। यीशु ने कहा, "इसलिए तुम भी, जब वह सब काम करो जो तुम्हें आज्ञा दी गई है, तो कहो, 'हम अयोग्य दास हैं; हमने केवल वही किया है जो हमें करना चाहिए था' " (लूका 17:10)।

तो आप कब एक ईसाई बन जाते हैं, मसीह के शिष्य? जब आप एक गलियारे से नीचे चलते हैं? जब आप एक वेदी पर घुटने टेकते हैं? जब आप ईमानदारी से रोते हैं? आवश्यक रूप से नहीं। मसीह के मूल अनुयायी चेले बन गए जब उन्होंने उसकी आज्ञा का पालन किया, जब उन्होंने "तुरंत नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिया" (मत्ती 4:22)। [1]

मसीह की आज्ञा का पालन करना, "मेरा अनुसरण करो," आत्म-मृत्यु का परिणाम है। आत्म-मृत्यु के बिना ईसाई धर्म केवल एक अमूर्त दर्शन है। यह मसीह के बिना ईसाई धर्म है।

शायद सबसे बुनियादी गलती जो कई ईसाई करते हैं, वह है उद्धार प्राप्त करना और एक शिष्य होने के नाते अलग। वे उन्हें ईसाई परिपक्वता के विभिन्न स्तरों पर रखते हैं, यह मानते हुए कि यीशु की उन अधिक कट्टरपंथी मांगों के लिए खुद को प्रतिबद्ध किए बिना बचाया जाना स्वीकार्य है, जैसे "क्रूस उठाना" और उसका अनुसरण करना (मत्ती 10:38)।

यह धारणा इस गलत विश्वास पर आधारित है कि उद्धार मुख्य रूप से मनुष्य के लाभ के लिए है - उसे खुश करने के लिए और अनन्त दण्ड को रोकने के लिए। " (पेज 15-18ए)

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करके और प्रत्येक व्यक्ति अन्य अनुरोधों के लिए प्रार्थना करके समाप्त करें।*

स्रोत: द मेकिंग ऑफ ए डिसाइपल डॉ . कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261011